सामग्री को सन्दर्भ से जोड़ना

कमला भण्डारी

आज के परिप्रेक्ष्य में यह बहुत आम बात हो गई है कि बच्चे भाषा पर अपनी समझ बनाने में कठिनाई का सामना कर रहे हैं और अधिकांश शिक्षक यह बात कहते हुए थकते नहीं हैं। भाषा सिखाने की प्रक्रिया में कई चरण हैं जिसकी समझ मुझे कक्षा में काम करने के बाद हुई। इन प्रक्रियाओं का प्रमाण कृष्ण कुमार की किताब बच्चे की भाषा और अध्यापक में मिलता है। एनसीएफ 2005 भी इस बात की वकालत करता है कि स्कूली ज्ञान को बच्चों के परिवेश से जोड़ा जाए। ऐसा करने से और सोचने व तर्क करने के पर्याप्त मौक़े देने से बच्चों के सीखने की शुरुआत हो जाती है।

आमतौर पर जब बच्चे पहली कक्षा में प्रवेश लेते हैं, तो वे अपनी समृद्ध मातृभाषा के साथ-साथ अपनी भावनाओं को व्यक्त करने वाले शब्दों व वाक्यों को लेकर आते हैं। अपनी ज़रूरतों को अच्छी तरह समझ व बोल सकते हैं। घर पर अपने बड़ों से अपनी बात मनवाने के तौर-तरीक़ों से भी भली-भाँति परिचित होते हैं जबकि यह शब्दावली उन्हें कोई नहीं सिखाता है। बच्चे घर पर मिले माहौल, बातचीत एवं अवसर को देखकर यह सब स्वयं ही सीख जाते हैं। वे यह भी अच्छी तरह जानते हैं कि किस समय और कैसे बड़ों से अपनी बात मनवानी है और वह भी केवल उनके चेहरे के हाव–भाव को देखकर। किसी समय विशेष पर बोलना है या नहीं और उनकी बात किस समय मानी जाएगी यह सब उनको मालूम होता है।

घर पर उन्हें बार–बार शब्दों व वाक्यों को बोलने व दोहराने के मौक़े मिलते हैं और इस माहौल में रहकर वे शब्दों का उपयोग करना, वाक्य बनाना और बोलना अपने आप सीख जाते हैं। भाषा नियमबद्ध होती है तथा इसके अपने तौर–तरीक़े होते हैं। बच्चे उनका प्रयोग बख़ूबी करते हैं। भाषा के नियमों का पालन भी करते हैं। घर पर समृद्ध परिवेश व वातावरण मिलने से वे घर की भाषा बोलने के साथ–साथ पढ़ना भी सीख जाते हैं। भाषा को सीखने का भरपूर परिवेश यदि विद्यालय में बनाया जाए और बच्चों को समृद्ध वातावरण दिया जाए तो उनमें पढ़ने–लिखने की क्षमता का विकास होता है।

एनसीएफ 2005 के आलोक में पहली से बारहवीं कक्षा तक की पाठ्यपुस्तकों को इस प्रकार विकसित किया गया है कि बच्चे रटने वाली प्रवृत्ति की अपेक्षा बोध के साथ अपेक्षित ज्ञान प्राप्त कर सकें। साथ ही, समाज में विभिन्न परिस्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने में पुस्तकीय ज्ञान का उपयोग करते हुए राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। एनसीएफ 2005 हमें यह सुझाता है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल केन्द्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक जाने में सक्षम बनाएगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति,1986 के बाद ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड आया जिसके तहत प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों के लिए शैक्षिक संसाधन उपलब्ध कराना व शिक्षक की तैयारी करवाना आदि मुद्दों पर ध्यान दिया गया। इसमें ब्लैकबोर्ड के रूप में कक्षा–कक्ष में दीवार पर एक तीन फीट लम्बी काली पट्टी बनाई गई थी जिसमें बच्चे अपना काम करते थे व चित्र बना सकते थे।

भाषा सिखाने के लिए मैं पहली कक्षा से ही यह तरीक़ा अपनाती हूँ। मैं स्थानीय शब्दों और बच्चों के घर, परिवेश व सन्दर्भ से जुड़े फलों, पेड़–पौधों, सब्ज़ियों के नामों का उपयोग करती हूँ। बच्चे इनसे परिचित होते हैं। फिर मैं श्यामपट्ट पर इनके चित्र बना देती हूँ। बच्चे चित्र देखते हैं, पहचानते हैं और उनके बारे में एक–दो वाक्य बोलते हैं। वे अपनी कॉपी में चित्र बनाते हैं और नाम लिखने की कोशिश करते हैं। जब यह शब्द बार–बार दोहराए जाते हैं तो वह लिखना सीख जाते हैं। मैं इस प्रक्रिया को जारी रखती हूँ और बच्चे पढ़ने व चित्र बनाने में सहज महसूस करना शुरू कर देते हैं।

यह कारवाँ चलता रहता है; कभी-कभी मैं नामों से शुरुआत करती हूँ, तो कभी छोटी–छोटी कविताओं से। छोटी व सरल शब्दों वाली कविता बच्चे जल्दी सीख जाते हैं जैसे कि चार लाइन की यह कविता :

मज़ा आ गया खेल में,
भालू भागा रेल में,
हँसकर बोला अच्छा टाटा,
मैं कर आऊँ सैर-सपाटा।

बच्चे इस कविता के माध्यम से तुकान्त शब्द बोलते हैं और इसे आसानी से याद कर लेते हैं। इस प्रकार छोटी–छोटी कविताओं से सुनने, बोलने व गतिविधि करने की क्षमता का विकास हो सकता है। जब मैंने जानवरों के नाम पूछे तो बच्चों ने घरेलू व जंगली जानवरों के बहुत-से नाम बताए। जब मैंने उनके बारे में बातचीत की और उनसे जुड़े प्रश्न पूछे तो एक–दो

बच्चे नहीं बता पाए, बाक़ी सब बच्चे कुछ न कुछ बता रहे थे। जैसे कि बाघ जंगल में रहता है, गाय घर पर रहती है। जब मैंने एक जानवर का नाम लिखकर उसके बारे में लिखने को कहा तो बच्चों ने छोटे–छोटे वाक्य बना दिए। थोड़ी बहुत मात्राओं की ग़लती हो जाती है पर मैं टोकती नहीं हूँ। फिर भी बच्चे जल्दबाज़ी में ग़लती कर ही देते हैं।

अन्य गतिविधियाँ

बच्चे जिज्ञासु होते हैं। उन्हें इस उम्र में सीखने की बहुत ललक रहती है। वे कॉपी से इतर कहीं और लिखना चाहते हैं। तो बच्चों के साथ मैंने निम्नलिखित कार्य किए :

सन्दर्भ से जोड़कर बातचीत

मेरा यह अनुभव तीसरी कक्षा में पढ़ रहे बच्चों का है। शुरुआत में मैंने उनसे उनके सन्दर्भों के आधार पर बातचीत की। कक्षा में मैंने सन्दर्भ से जुड़े कुछ चित्र भी बनाए। उन चित्रों पर बच्चों से चर्चा की गई और बच्चों ने अपनी बात को खुलकर साझा किया। बातचीत के दौरान यह देखा गया कि जब उनके परिचित सन्दर्भों से या उनकी आसपास की घटना से जुड़ी हुई चीज़ों पर बातचीत करो तो वह अपनी बात खुलकर करते हैं।

कविताएँ व कहानियाँ

बच्चों को पहली व दूसरी कक्षा में छोटी–छोटी कविताएँ याद करवाई गई। कविताएँ बच्चों को पसन्द होती हैं और वे इन्हें बड़ी जल्दी याद कर लेते हैं। वे इन कविताओं को गुनगुनाते और दोहराते रहते हैं। मैंने कुछ कहानियों का चयन किया जिसमें पंचतंत्र लोककथाएँ, लालू और पीलू, गिजुभाई की कहानियाँ, कजरी गाय व बरखा सीरीज़ की कहानियाँ मुख्य रूप से हैं। मैंने देखा कि कहानी सुनने के बाद बच्चे उससे मिलती–जुलती अपनी कहानी भी सुनाने लगते हैं। लेकिन इस स्तर पर बच्चों को समझने के लिए अध्यापक को धैर्य रखना पड़ता है। कहानियों पर बातचीत के बाद बच्चों को चित्र बनाने या अपने अनुभव के आधार पर कुछ लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस प्रोत्साहन से बच्चे लिखने की अच्छी शुरुआत करते हैं।

चित्र

कक्षा–कक्ष में सुसज्जित माहौल बनाने के लिए मैं फल व सब्ज़ी के चित्र श्यामपट्ट पर बनाती हूँ और जब बच्चों से बनाने के लिए कहो तो वे अपनी पसन्द का चित्र सबसे पहले बनाते हैं। इस गतिविधि से बच्चों को शब्दों की पहचान होती है और वे उसके बारे में बोलने लगते हैं और अपने विचार प्रकट करते हैं। अपनी पसन्द व नापसन्द को बताते हैं। चित्र बनाने के अभ्यास से बच्चों की लिखावट व लिखने के कौशल में भी निखार आता है।

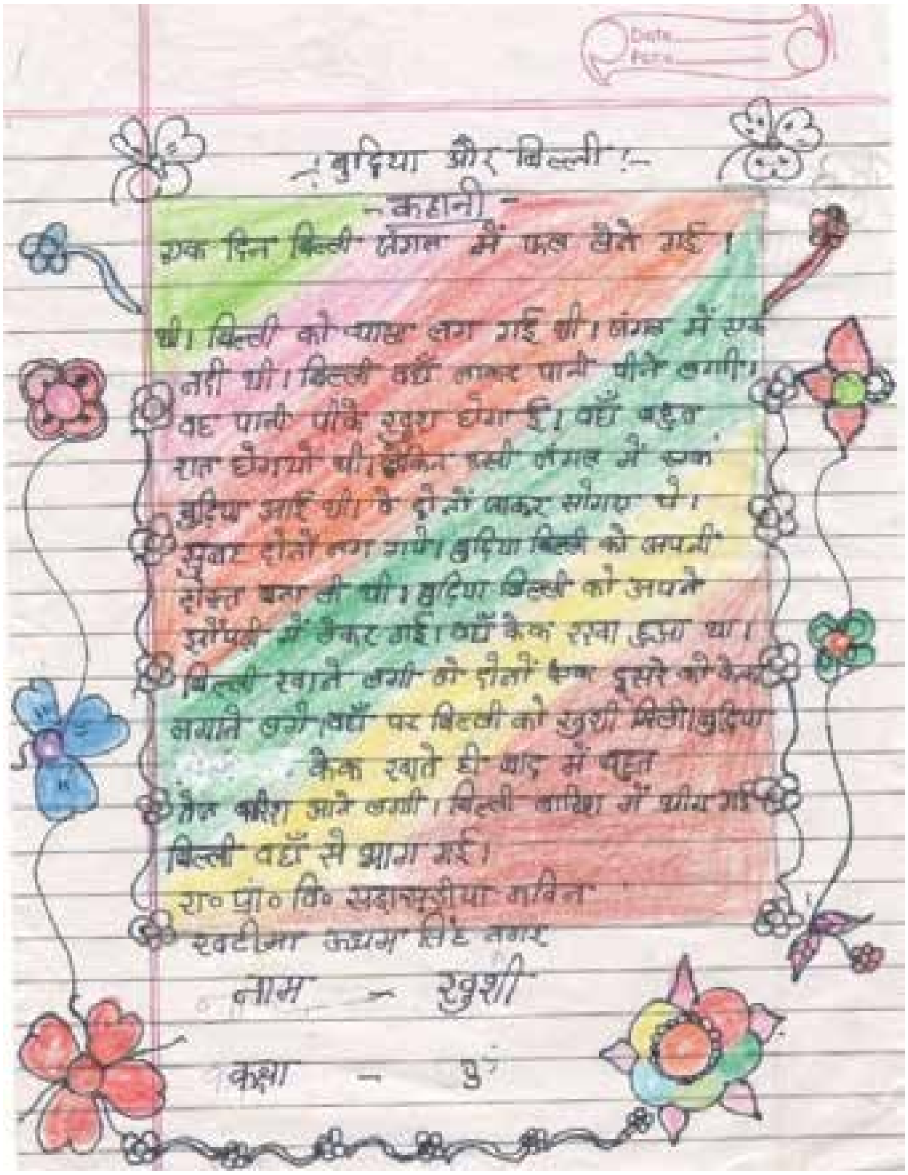
बाल साहित्य

चौथा चरण बाल साहित्य है जो पढ़ना–लिखना सीखने में विशेष महत्त्व रखता है। मैंने अपने शिक्षण के दौरान इसका बहुत इस्तेमाल किया है। मैंने बच्चों को पढ़ने के बहुत सारे अवसर दिए। बरखा सीरीज़ की किताबें बच्चों के स्तर के अनुसार हैं और सीखने में उनकी बहुत मदद करती हैं। इसका जीता जागता उदाहरण मेरे विद्यालय के तीसरी कक्षा के बच्चे हैं। वे छोटी कहानियों वाली बरखा सीरीज़ की किताबें अधिक पढ़ते हैं। इनमें नाम व शब्दों का बार–बार दोहराव है जिससे बच्चे जल्दी सीख जाते हैं।



कहानी निर्माण

कहानी निर्माण पर काम करते हुए मैंने यह देखा कि कक्षा में बाल साहित्य पढ़ने का असर बच्चों में पढ़ने की ललक के साथ लिखने में भी पड़ता है। बच्चे पढ़ी हुई कहानी और अपने अनुभवों के आधार पर नई कहानी गढ़ने की कोशिश करते हैं। वे दोनों को जोड़कर एक कहानी का निर्माण करते हैं।



आज मैं गर्व के साथ कह सकती हूँ कि पिछले दो सालों में मैंने बच्चों को सिखाने की जो कोशिश की है उसका परिणाम सार्थक रूप में आज मेरे सामने है। बच्चे वाक्य निर्माण करने तथा किसी विषय पर लिखने के अलावा एक छोटी स्वयं रचित कहानी का निर्माण भी कर सकते हैं। इसके अलावा पाठ्यपुस्तक के अभ्यास कार्य को भी बख़ूबी कर लेते हैं।

मैंने एक कहानी पर अपने विचार लिखने को कहा तो कई बच्चों ने बहुत ही सुन्दर कहानियाँ बनाईं। इसमें ख़ास बात यह थी कि बच्चे मूल्यांकन भी स्वयं कर रहे थे। एक-दूसरे की कहानी को सुनकर हँस रहे थे और अपना तर्क भी रख रहे थे। जब मैंने तीसरी कक्षा की पाठ्यपुस्तक रिमझिम का पाठ 'कब आऊँ' पढ़ाया तो बच्चों ने बहुत प्रश्न पूछे और विचार विमर्श करने के बाद पाठ के लिए दूसरे शीर्षक बड़ी आसानी से बता दिए। सब बच्चों ने अपना अलग–अलग शीर्षक बताया। बच्चों की सोचने की शक्ति बड़ी तीव्र होती है। एक बच्चे ने पाठ का नाम 'दुकानदार व सेठ' कहा, एक ने बताया 'मूर्ख सेठ', जबकि कई बच्चों को लगा कि 'जैसी करनी वैसी भरनी', 'जैसे को तैसा' भी हो सकता है। पाठ के उद्देश्य को बच्चों ने समझा हो या नहीं, पर वे पाठ के अभ्यास व गतिविधि अच्छी तरह से कर पा रहे थे और अपने अनुभव को जोड़कर आगे बढ़ने को तत्पर थे।

भाषा सिखाने के उद्देश्य

भाषा केवल सम्प्रेषण का ही माध्यम नहीं है बल्कि यह सोचने, समझने और अपनी बातों को व्यक्त करने में हमारी मदद करती है। मेरी समझ से भाषा सिखाने के कुछ बिन्दु निम्नवत हैं...

- अपने विचारों को साझा करना।
- स्कूल के वातावरण को सहज बनाना।
- अपनापन व लगन की भावना पैदा करना।
- मातृभाषा एवं क्षेत्रीय भाषा को जोड़कर ज्ञान का विस्तार करना।
- अपनी बात कहने के पूर्ण अवसर देना।
- बच्चों की बात सुनना।
- समझकर पढ़ने की आदत विकसित करना।
- परिवेश में उपलब्ध सन्दर्भों व चित्रों के आधार पर ज्ञान को बढ़ावा देना व अनुमान लगाना।
- स्कूली ज्ञान को बाहरी ज्ञान से जोड़कर सिखाना।
- कविता व कहानी से अपने अनुभव को जोड़ पाना।
- अपनी बात को बेझिझक कह सकना एवं सुनी कहानी को अपने परिवेश व अनुभव के साथ जोड़ना।
- सम्पूर्ण भाषाई कौशलों का विकास करना।
- स्वाध्याय एवं स्वलेखन के प्रति जागृत करना।
- आत्मविश्वास को बढ़ावा देना।
- विषयवस्तु एवं लेखन को भली भाँति समझना।
- भाषा के ज़रिए सौन्दर्य, कल्पनाशीलता, सृजनात्मकता की भावना को विकसित करना।

एक शिक्षिका होने के नाते यह मेरा फ़र्ज़ बनता है कि मैं बच्चों के पास पहले से मौजूद ज्ञान को आगे बढ़ाऊँ। भाषा को समृद्ध बनाने, तर्क करने, अभिव्यक्त करने, विश्लेषण करने, कल्पना करने की क्षमता आदि का विकास करने के लिए मुझे लगातार अपने व्यक्तित्व विकास एवं स्वयं विकास की ज़रूरत होगी। बच्चों के विकास में शिक्षक की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका रहने के साथ–साथ अभिभावकों का भी सहयोग आवश्यक है।

References

Kumar Krishna, 'The Child's Language And The Teacher', National Book Trust, Delhi.

NCERT, Rimjhim, Class III.



कमला भण्डारी पिछले 26 सालों से अध्यापन के पेशे में हैं। उन्होंने लगभग ग्यारह साल तक निजी विद्यालय, आचार्य नरेन्द्र देव विद्यालय खटीमा में पढ़ाया। वर्तमान में वे राजकीय प्राथमिक विद्यालय सड़ासड़िया नवीन, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड में सहायक अध्यापिका के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने बीएड व विशिष्ट बीटीसी किया है। वे राजनीति शास्त्र में स्नातकोत्तर हैं। बाल साहित्य व सामान्य ज्ञान की पुस्तकें पढ़ने में रुचि रखती हैं। उनसे bhandarikamla10@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।